VIBRANT GANGA

दामोदर नदी

ऊर्जा से परिपूर्ण

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- दामोदर नदी झारखंड के पलामू जिले के छोटा नागपुर पठार में 610 मीटर औसत समुद्र तल की ऊंचाई पर सोनाजुरिया जलप्रपात (खमारपत पहाड़ियों) से निकलती है और पश्चिम बंगाल के हावडा जिले में हुगली नदी से मिलती है।
- दामोदर 540 किलोमीटर की दूरी तय करता है, जिसमें से 240 किलोमीटर झारखंड में और 300 किमी पश्चिम बंगाल में पडता है।
- दामोदर नदी बेसिन का जलग्रहण क्षेत्र 23,370 वर्ग किलोमीटर है, जिसका लगभग 74% झारखंड में और शेष 26% पश्चिम बंगाल में पडता है।
- दामोदर गंगा नदी के दाहिने किनारे की सहायक नदियों में से एक है।
- बराकर, कोना, बोकारो, हाहरो, जमुनिया, घारी, गुनिया, खुंडिया और भेर दामोदर की प्रमुख सहायक नदियॉं हैं।
- दामोदर नदी बेसिन को भारत के प्रमुख चक्रवातीय वर्षा और बाढ़ क्षेत्रों में से एक माना जाता है।

मुख्य विशेषताऐं

- दामोदर नदी, जिसे दामूदा (दामू का अर्थ है "पवित्र" और दा का अर्थ है "पानी"), देवनाडा या देवनाडी के नाम से भी जाना जाता है, जो वर्षा पर निर्भर, उथली और तेज बहाव वाली नदी है।
- यह विश्व की सबसे समृद्ध खनिज पट्टियों में से होकर बहती है।
- दामोदर नदी बेसिन, बंगाल बेसिन टेक्टोनिक प्लेट और छोटा नागपुर पठार के बीच मे स्थित है, जहॉं उत्तर–दक्षिण उन्मुख सामान्य टेक्टॉनिक भ्रंश इनको अलग करते हैं।
- बेसिन में नम पर्णपाती वन एवं उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन प्रकारों का प्रभुत्व है।

दामोदर नदी को तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है-

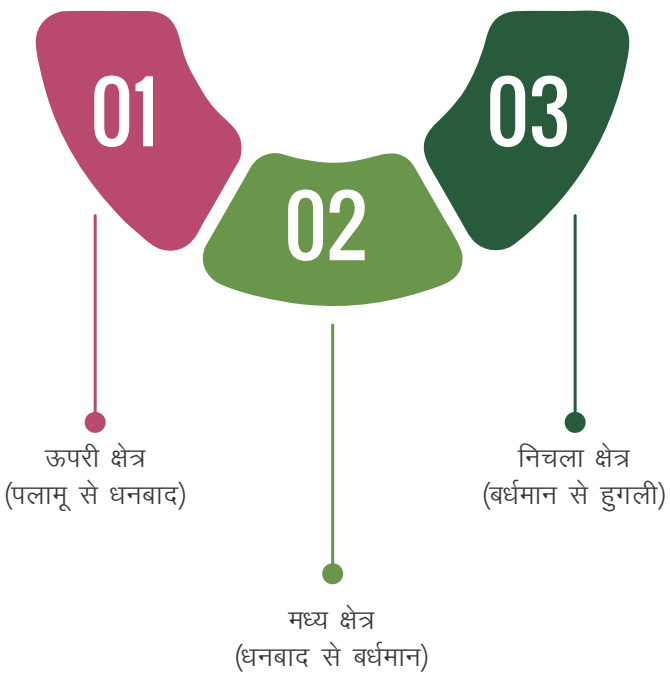

- दामोदर नदी बेसिन से 535 जेनेरा और 137 फैमिली से संबंधित 853 पौधों की प्रजातियों को दर्ज किया गया है।
- बेसिन स्तनधारियों की 24 प्रजातियों, 17 सरीसृपों और 222 पक्षियों का आवास स्थान है।
- दामोदर और हुगली संगम मे गांगेय डॉलफिन (*प्लैटनिस्टा गैंजेटिका*) और घाघरा नाले से स्मूथ कोटेड ओटर (*लूट्रोगेल पर्सपिसिलाटा*) पाये गये है।
- निचले क्षेत्र में पंचेत बांध से बासुदेवपुर (दामोदर और हुगली नदी का संगम) तक 14 फैमिली से संबंधित 44 जलीय पक्षीयो की प्रजातियों को दर्ज किया गया है।

संकटग्रस्त (EN) प्रजातियाँ

स्तनधारी
गांगेय डॉल्फिन

प्रमुख संरक्षित क्षेत्र

रमनाबागान वन्यजीव अभ्यारण

रोचक तथ्य

- नदी का नाम संस्कृत शब्द दामा (रस्सी) और उदार (पेट) से आया है, जिसका अर्थ है "पेट के चारों ओर रस्सी" भगवान कृष्ण का दूसरा नाम दामोदर था जो उनकी माता यशोदा ने तब रखा था, जब उन्होंने कृष्ण को एक बड़ी रस्सी से बांध दिया था।
- मत्स्यपुराण (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) में, दामोदर नदी का नाम महागौरी रखा गया है और इसे अंतसिरा (चट्टानी नदी) और दुर्गमा (एक नदी जिसका सामना करना मुश्किल है) के रूप वर्णित किया गया है, जो नदी के अपस्ट्रीम बेडरॉक–नियंत्रित मार्ग को दर्शाता है।
- कभी "बंगाल का शोक" कहे जाने वाले दामोदर अपनी बाढ़–विनाशकारी क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। 1823 और 1943 के बीच, नदी में 31 भीषण बाढ़ आई थी।
- दामोदर नदी बेसिन को आमतौर पर "भारत मे कोयले का भंडार" के रूप मे जाना जाता है और यह देश के कोयला भंडार का 46% हिस्सा है। उघोगों द्वारा खपत किया जाने वाला 60% कोयला बेसिन से आता है।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- कोयला खदानों के आसपास केंद्रित औघोगिक क्षेत्र और बस्तियों के विकास ने दामोदर नदी की ऊपरी भाग पर गंभीर मानवजनित दबाव डाला है। अत्यधिक उत्खनन, तेल के निपटान, फ्लाई ऐश और कोयले की धूल ने इसके जल को दूषित कर दिया है।
- बिना उपचार के नदी में औघोगिक अपशिष्टों के सीधे प्रवाह ने ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में पानी की गुणवत्ता को गंभीर रूप से खराब कर दिया है, जिससे यह भारत की सबसे दूषित नदी मे से एक बन गई हैं।
- नदी के निचले हिस्से में अप्रतिबंधित रेत खनन आवास के खराब होने का एक प्राथमिक कारण है।
- दामोदर मुख्य धारा पर छह प्रमुख जलाशय, अर्थात तेनुघाट बांध, पंचेत बांध, दुर्गापुर बैराज, बराकर नदी पर तिलैया बांध और मैथन बांध, और कोनार बांध ने नदी के प्राकृतिक प्रवाह और जलीय आवास को बदल दिया है।
- बेसिन के फनल आकार से ऊपरी क्षेत्र में विशाल जलग्रहण और निचले क्षेत्र में संकीर्ण जलग्रहण के वजह से निचले क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति उत्पन हो जाती है।

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution